दिनांक :- 17-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा।

लेखक का नाम डा॰ फारूक़ आजम (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड प्रतिष्ठा इतिहास
पत्र - प्रथम

एकाई :- दो - सिंधु घाटी की सभ्यता -

यहाँ पर पत्थर के नींव पर आधारित मकान का साक्ष्य मिला। पत्ती के आकार का बाणाग्र, कांस से बनी मोटी चूड़ी का टुकड़ा, चाक पर निर्मित मृदभाण्ड जिसपर छः दलीय पुष्प झुमका, हृदय, छत्ता जैसी आकृति निर्मित है।

(14) अलीमुराद :- यह वर्तमान पाकिस्तान में सिंधु नदी के किनारे अत्यंत छोटा स्थल है जो चारों तरफ से एक पाषाण निर्मित दीवार से घिरा है।

यह एक ग्रामीण स्थल ज्ञात होता है। यहाँ से एक कुआँ तथा, कांसे की एक कुल्हाड़ी प्राप्त होती है।

Scanned with CamScanner

(15) आमरी:- यहाँ सबसे प्राक् हड़प्पाकालीन साक्ष्य प्राप्त हुआ है। सबसे पहले 1929 में एन. जी. मजूमदार ने इस स्थल की खुदाई कराई। पुनः 1957-58 में जे. एस कैसल के नेतृत्व में खुदाई हुई। यहाँ पर सुव्यवस्थित दुर्गीकरण के साक्ष्य नहीं मिले हैं।

यहाँ से बारहसिंगे का साक्ष्य मिला है।

(16) रोजदी:- यह स्थल गुजरात के सौराष्ट्र जिले में स्थित है। यहाँ से संस्कृति के दो चरण प्राक् हड़प्पा तथा उत्तर हड़प्पा के साक्ष्य मिले हैं।

यहाँ के मृदभाण्ड लाल चमकदार तथा काले और लाल प्रकार के हैं

(17) संघोल:- यह स्थल भारतीय पंजाब के लुधियाना जिले में चंडीगढ़ के पास स्थित है। इसकी खुदाई क्षेय. एस. एस तलवार तथा आर. एस बिष्ट की है।

यहाँ से ताँबे की दो छेनियाँ प्राप्त हुई हैं।

यहाँ से वृत्ताकार अग्निकुंड के भी साक्ष्य मिले हैं।

Scanned with CamScanner

(18) राखीगढ़ी :- राखीगढ़ी का उत्खनन व्यापक पैमाने पर 1997-99 दौरान अमरेन्द्रनाथ के द्वारा किया गया है। राखीगढ़ी से प्राक् हड़प्पा तथा परिपक्व हड़प्पा इन दोनों कालों में प्रमाण मिले हैं। यहाँ से ऊँचे चबूतरे पर बनायी हुई अग्नि वेदिका आदि मिली है।

(19) मीत्ताथल :- यह स्थल हरियाणा के भिवानी जिले में स्थित है। इसकी खुदाई सूरजभान के नेतृत्व में 1968 में हुई। यहाँ से प्राक्, उन्नत तथा उत्तर हड़प्पा संस्कृति के साक्ष्य मिले हैं।

यहाँ से ताँबे की कुल्हाड़ी प्राप्त हुई है।

(20) कुणाल :- यह स्थल हरियाणा के हिसार जिले में सरस्वती के किनारे स्थित है। यहाँ से चाँदी के दो मुकुट प्राप्त हुए हैं।

(21) मालवन :- यह स्थल वर्तमान में गुजरात प्रांत में सूरत जिले में ताप्ती नदी के मुहान पर स्थित है।

यहाँ से पतनोन्मुखी तथा उत्तर उत्तर हड़प्पा सभ्यता के
साक्ष्य प्राप्त हुए है।
(22) अल्लोहदीनो :- यह स्थल सिंधु तथा अरब सागर के
संगम पर स्थित है। 1982 में फेयर सर्विस ने इसका उत्खनन कराया।
यहाँ से मिट्टी की बनी खिलौना गाड़ी तथा सोने-चाँदी
से निर्मित आभूषण मिले है।

हड़प्पा सभ्यता की विशेषता :-

(1) नगर योजना :- नगर योजना इस सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। संपूर्ण नगर प्रायः दो असमान भागों में
विभाजित है। पहला भाग दुर्गीकृत है तो दूसरा भाग अनावृत
है। यद्यपि कुछ स्थलों पर एकल विभाजन (लोथल), दोनों
खंडों का दुर्गीकरण (कालीबंगा) तथा नगर में मध्यस्तरीय
विभाजन (धौलावीरा) भी देखने को मिलता है।

हड़प्पा सभ्यता का नगर नियोजन व्यवस्थित था। ये नगर आयताकार या वर्गाकार आकृति में मुख्य सड़कों तथा चौड़ी
गलियों के ग्रिड पर आधारित थे।

नगर का मुख्य मार्ग उत्तर से दक्षिण जाता था तथा दूसरा मार्ग पूरब से पश्चिम उसे समकोण पर काटता था मोहनजोदड़ो की मुख्य सड़क (राजपथ) की चौड़ाई दस मीटर तक थी। अन्य सड़कों की चौड़ाई 2.75 मीटर से 3.66 मीटर तक थी। गलियाँ 1.8 मीटर तक चौड़ी होती थी! सड़के कच्ची होती थी। सिर्फ मोहनजोदड़ो में एक सड़क के पक्कीकरण का साक्ष्य मिला है।

सड़कों के किनारे पानी बहने के लिये नाली की व्यवस्था थी जिसमें कूड़ा-करकट एकत्रित करने के लिये जगह-जगह मनहोल बने थे। नालियों तथा मनहोल पर ढक्कन रहता था

भवन निर्माण :- इस सभ्यता में बड़े-बड़े भवन मिले हैं जिसमें महास्नानागार, पुरोहित आवास अन्नागार, सभाभवन आदि प्रमुख हैं!

मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत अन्नागार है जो

45 मीटर लंबी तथा 15 मीटर चौड़ी है। यह अन्नागार दुर्ग के भीतर है।

हड़प्पा सभ्यता के प्रत्येक मकानों में अनेक कमरे, कुएं स्नानागार तथा आंगन होता है। यहां का फर्श भी कच्चा होता है, केवल कालीबंगा में फर्श के पक्कीकरण करने के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

सिंधु घाटी के लोग आडम्बर के विशेष प्रेमी नही थे। उन्होंने सुंदरता से अधिक उपयोगिता पर बल दिया है।

मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा के भवनों में स्तंभों का कम प्रयोग हुआ है। कही-कही चतुर्भुजाकार अथवा वर्गाकार स्तंभ मिलता है, गोलाकार नही।

मकानों का औसत आकार 30 फीट है। ईटों का आकार 4:2:1 है।

मोहनजोदड़ो से गढ़ी तथा निचले नगर के बीच सिंधु नदी की एक शाखा बहती थी।

सुत्कोगेंडोर में एक विशाल दुर्ग एंव परकोटे से घिरे

आवास स्थल का पता चला है।

धौलावीरा तथा सुरकोटड़ा में भवन-निर्माण में यथा संभव पत्थर का प्रयोग किया गया है।

राजनीतिक जीवन :- उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर हड़प्पा सभ्यता के राजनीतिक संरचना का ज्ञान नहीं हो पाया है।

विभिन्न विचार (प्रशासन के संबंध में)

(1) हण्टर महोदय - जनतांत्रिक पद्धति

(2) मैके महोदय - प्रतिनिध्यात्मक सरकार

(3) व्हीलर रूबेन / बी-बी. स्टर्च - गुलामों पर आधारित प्रशासन

(4) स्टुअर्ट पिगॉट - हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो दो पृथक राजधानियाँ थी और वहाँ पर पुरोहितों का शासन था। लोकप्रिय विचार है कि वहाँ पर संभवतः शिल्पियों एवं व्यापारियों का शासन था।

सामाजिक जीवन -

नगरों के निर्माण तथा मकानों के आकार प्रकार में अंतर की वजह से हड़प्पाई समाज एक बहुस्तरीय